भारतीय ज्ञान परम्परा वर्त्तमान समय की आवश्यकता

डॉ. राजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
S.T.D. Govt. Degree College, Shahpur
V.K.S.U. Ara.

भारतीय ज्ञान परम्परा: आज पूरी दूनिया चेतना (Consciousness) पर बहस (Debate) चल रही है। तंत्रिका विज्ञान द्वारा चेतना के ऊपर गहन शोध चल रहा है। विज्ञान भैरव तंत्र में 112 प्रकार की चेतना (Consciousness) की बात कही गयी है। शिव पार्वती संवाद में पार्वती जी ने शिव जी से पूछा है कि हम समय (Time) और अंतराल / दूरी से परे जाकर, यथार्थ को जिस प्रकार देख सकते हैं? शिव जी ने पार्वती जी को उत्तर दिया है कि हम 112 प्रकार की समाधि (Meditation) व साधना से समय और अतंराल / दूरी की सीमा से परे होकर यथार्थ की अनुभूति कर सकते है। उसी प्रकार महाकवि कालिदास के समान ग्रंथ अभिज्ञान शकुंतलम का अनुवाद सन् 1783 में विलियम जोंस (जर्मनी) के द्वारा किया गया था। जिसमें जर्मनी अपनी नाटयशैली को फ्रांस के अधिपत्य से मुक्त कराने के लिए निरंतर प्रयास उसी के अनुवाद से किये जो कि यह दर्शाता है कि भारत की ज्ञान परम्परा कितनी महान थी।

भारत की ज्ञान परम्परा पर जो आघात औपनिवेशिक काल में हुआ, वह आघात कैसा था और क्यों था। 2 फरवरी, 1835 को मैकाले द्वारा बिट्रिश संसद में दिये गए भाषण में इसका उत्तर मिलता है। उसने कहा – "मैंने पूरे भारत का भ्रमण किया, मैंने एक भी भिखारी और एक भी चोर नहीं पाया। इस देश में इतना धन इस प्रकार के नैतिक मूल्यों और लोगों की ऐसी क्षमता को मैंने देखा है।" फिर उसने चिंता जताते हुए कहा- "अगर ऐसा ही रहा तो हम भारत को कभी भी जीत नहीं सकते है।" बिट्रिश सांसद को मैकाले ने फिर समाधान भी बताया "यदि भारत पर अधिपत्य स्थापित करना है तो हमें उसकी कमर पर चोट करनी पड़ेगी।" उसे चिह्नित करते हुए कहा कि- "भारत की बुनियाद सभ्याताई –सांस्कृतिक विरासत है, यही उसकी ताकत है और उसी पर प्रहार करना पड़ेगा।" मैकाले ने लोगों के मन के प्रश्न को देखा। यह कैसे होगा? इस प्रश्न का निराकरण करते हुए उसने बिट्रिश संसद में कहा- "इसका एकमात्र रास्ता यह है कि हम भारत की पुरातन और प्राचीन (Old And Ancient) शिक्षा पद्धति को अपनी शिक्षा पद्धति से विस्थापित कर दे।" उसका परिणम क्या होगा? मैकाले ने इसका उत्तर देते हुए कहा – "उसके कारण भारत के लोगों में एक हीन भावना की ग्रंथि विकसित होगी और जिससे जो भी विदेशी हैं, इंग्लिश हैं, वे उसे अच्छा और महानतम (Good the Greatest) समझेगे।" ऐसा कहते हुए उसने भारत में अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लाने का प्रस्ताव दिया, जिस औपनिवेशिक सरकार ने स्वीकार कर लिया।

यूरोप केन्द्रित वैचारिक दासता का प्रभाव कितना है, उसका मैं एक उदाहरण, तक्षशिला और विक्रमशिला विश्वविद्यालय थे। नालंदा विश्वविद्यालय में एक नौ मंजिला पुस्तकालय था जिसमें लगभग एक करोड़ पुस्तके थी। 1193 ई० में तुर्क आक्रमणकारी बख्तियार खिलजी की बर्बर सेना ने विश्वविद्यालय को आग और हिंसा के द्वारा पूरी तरह समाप्त कर दिया। शिक्षा के इस केन्द्र में जहाँ तिब्बत, चीन और अरब के देशों से छात्र तथा शोधार्थी आते थे उसे बख्तियार खिलजी ने आग के हवाले कर दिया। दूनिया के इतिहास में ज्ञान पर यह सबसे बड़ा हमला था।

8000 छात्र और 2000 शिक्षक मार दिए गए। खिलजी की सेना ने जब जानना चाहा कि इन पुस्तकों में क्या है, तब वहाँ बताने वाला कोई नहीं बचा था। वहाँ तीन महीने तक आग लगी रही। यह तो सिर्फ एक घटना मात्र है। प्राचीन काल में द ग्रेट लाइब्रेरी ऑफ अलेम्जेड्रिया (The great library of Alexandria) का पतंग आग लगने से हुआ। लेकिन वहाँ आग लगाई नहीं गई थी, बल्कि वहाँ आग पहुंच गयी थी।

द ग्रेट लाइब्रेटी ऑफ अलेक्जेंड्रिया में जितनी पुस्तके थी, उतनी तो हमारे पास पांडुलिपियाँ थी। सभी विद्वानों का यह मानना है कि अलेक्जेंड्रिया (Alexandria) के पुस्तकालय में 2 से 7 लाख पुस्तकें थी और हमारे पास उस वक्त नालंदा विश्वविद्यालय में 10 लाख तो सिर्फ पांडुलिपियाँ थी। तथा 10000 दस हजार लोगों में से 8000 छात्र थे तथा 2000 दो हजार शिक्षक थे। ये वे लोग थे जो एक चीटी को भी मारना गुनाह है मानते थे। सीजर (Caesar) भी चाहता था कि अलेक्जेंड्रिया (Alexandria) की लाइब्रेरी का पतन हो।

वे सबलोग, जो मानवीय चेतना से डरते हैं, जो मानव के संकल्प से डरते है। वे ज्ञान के विरोधी है, क्योंकि ज्ञान मानव में चेतना का विकास करता है, ज्ञान से मानव में संकल्प आता है। उसी ज्ञान की चेतना के कारण दंडी नामक साधु, जो गंगा किनारे अर्धनग्न बैठे हुए थे, उन्होंने विश्व विजय के लक्ष्य से निकले सिकंदर को चुनौती दे दी थी कि मैं तुम्हें राजा नहीं मानता हूँ। यह वही ज्ञान की चेतना है, जो अर्धनग्न गांधी को प्राप्त थी और जब वे आधे वस्त्र पहनकर बिट्रेन गए, तब उन्होंने कहा कि मैं इसी वेश-भूषा में राजा या रानी से मिलूंगा। इससे पूर्व 1903 ई० में कभी की एक ऐसी ही घटना है। गंगाधर शास्त्री काशी में एक प्रसिद्ध विद्धान साधक थे। उनको लार्ड कर्जन ने बुलाया। जब उसकी वेश-भूषा देखने के लिए उनके पास अधिकारी आए, तो उन्होंने कहा कि यदि कर्जण को मुझसे मिलना है तो उसके पास इसी वेशभूषा में जाऊंगा। मैं भारतीय हूँ और भारतीय ही बनकर जाऊंगा। कर्जण को मिलना है तो कर्ज किसी भी वेश-भूषा में मिले उसके लिए मेरी कोई शर्त नहीं है। मेरी शर्त यही है कि मैं भारतीय बनकर जाऊंगा।

यह वह भारत है, यह ज्ञान केन्द्रित सभ्यता है। जिस नालंदा विश्वविद्यालय की एक करोड़ पुस्तके, दस लाख पांडुलिपियाँ जला दी गई तथा 8000 विद्यार्थी 2000 शिक्षक मार दिए गए। जिस विश्वविद्यालय को जला दिया गया। हम में से कोई भी नालंदा विश्व विद्यालय को गूगल में खोजेगा तो मात्र 7165000 बार खोजे मिलेगी। वहीं अलेक्जेंड्रिया में केवल 7 लाख पुस्तके थी, उसमें किसी की हत्या नहीं हुई। आप द ग्रेट लाइब्रेरी ऑफ अलेक्जेंड्रिया का खोजे, तो 10600000 बार खोजे मिलेगी। और अलेक्जेंड्रिया पुस्तकालय (Alexandria Library) खोज करेगें तो 34000000 बार खोज मिलेगी। यह यूरोप की सभ्यता और विचारों का दूनिया पर किस प्रकार से आधिपत्य है कि दूनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी के बारे में जानगें की किसी की उत्कंठा नहीं है।

अंत में हम यह कह सकते हैं कि अपने भारत की ज्ञान परम्परा को शैक्षणिक मुख्य धारा में ला करके छात्र-छात्राओं को अवगत कराया जाय। जिससे भारत पुनः अपनी भारतीय ज्ञान परम्परा से विश्व गुरु को सपना पुनः एक बार साकार हो सके। इसी आशा विश्वास के साथ आलेख को समाप्त करता हूँ।